यदि बच्चों को रचनात्मक अभिव्यक्ति के अवसर मिलें तो वे सिर्फ पढ़ने और लिखने तक ही सीमित नहीं रहते बल्कि अपने आसपास की दुनिया की समझ विकसित करने में भी मददगार होते हैं। दुनिया की यह समझ अपने आसपास से शुरू होकर सकारात्मक हस्तक्षेप की तरफ जाती है। यह अनुभव बच्चों को मिले ऐसे अवसर और उससे उनमें विकसित होने वाले नजरिए और क्षमताओं को रेखांकित करता है।

राज चौधरी और अनुपमा झा

हमारा अखबार : बुनियाद

राज चौधरी

दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर के उपरान्त केन्द्रीय शिक्षा संस्थान बुनियादी विद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) में क्राफ्ट शिक्षिका के रूप में कार्यरत हैं।

अनुपमा झा

अनुपमा का क्षेत्रीय संसाधन केन्द्र (आर. आर. सी. ई. ई.) में प्रोजेक्ट एसोशिएट के रूप में कार्यरत हैं।

बुनियादी शिक्षा सिर्फ गांव के स्कूल मे लागू हो सकती है इस भ्रांति को दूर करते हुए केन्द्रीय शिक्षा संस्थान प्रयोगात्मक बुनियादी स्कूल की स्थापना 1 सितम्बर 1951 मे केन्द्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय के परिसर में हुई। देखो, करो और सीखो; यही इस स्कूल का मूल मंत्र था। इसीलिए यहां पाठ्यपुस्तकों को विशेष स्थान नहीं दिया गया। बच्चों के संपूर्ण विकास के लिए उद्योग के साथ-साथ प्राकृतिक और सामाजिक परिवेश के समझने को विशेष स्थान दिया गया। अब यह दिल्ली सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त उच्च प्राथमिक स्कूल है, जो दिल्ली सरकार द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रम और पुस्तकों पर आधारित शिक्षा प्रदान करता है।

इस स्कूल के अधिकतर बच्चे निम्न सामाजिक-आर्थिक वर्ग के हैं। उनके माता-पिता अधिक पढ़े-लिखे नहीं हैं। शिक्षा का प्रवेश इनके परिवार में इन बच्चों के द्वारा ही हो रहा है। ज्यादातर बच्चों के माता-पिता दैनिक मजदूरी से अपना परिवार चलाते

यह अनुभवात्मक लेख राज चौधरी, क्राफ्ट शिक्षिका केन्द्रीय शिक्षा संस्थान, बुनियादी स्कूल के शोध कार्य पर आधारित है। यह कार्य क्षेत्रीय संसाधन केन्द्र के टीचर फेलोशिप प्रोग्राम के तहत सुश्री मलयश्री हाशमी, रंगकर्मी के मार्गदर्शन में किया गया है।

हैं। कुछ बच्चों के पिता चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी भी हैं। इन बच्चों के लिए केवल पाठ्यपुस्तक ही शिक्षा का एकमात्र माध्यम है। शायद इस सीमा के चलते ही हमारे बच्चे खुद को खुलकर अभिव्यक्त नहीं कर पाते। उनके लेखन में उनकी प्रांतीय भाषा का असर काफी हद तक नजर आता है। यदि ये बच्चे मानक/ प्रचलित भाषा (यहां हिन्दी या अंग्रेजी) नहीं सीख पाए तो दूसरे विषयों के सीखने की प्रक्रिया में भी उन्हें मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। स्कूल में जो भी शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराई जाती है, वह हिंदी या अंग्रेजी में होती है। साथ ही बच्चों से अपेक्षा की जाती है कि वे मानक भाषा में खुद को, खासकर लिखित रूप में, अभिव्यक्त कर पाएं। इसके लिए उन्हें बार-बार लिखने और बोलने के मौके मिलने चाहिएं, पर दुर्भाग्यवश भाषा की कक्षा में यह अवसर विरले ही मिलता है। साथ ही प्रचलित मूल्यांकन पद्धति उनकी परेशानी को और भी बढ़ा देती है। हमारा मानना है कि बच्चों को खुद कुछ करने की आजादी चाहिए। हमें लगता है कि बच्चों के कार्यों का मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया है जो उनके व्यक्तित्व को निखरने नहीं देती। दुर्भाग्यवश यह प्रक्रिया हमारे शिक्षा तंत्र का अनिवार्य हिस्सा है। वह औपचारिक परीक्षा हो या सतत मूल्यांकन, हमारा स्कूल भी इससे अछूता नहीं है। हम अपने शोध के लिए एक ऐसा माध्यम ढूंढ़ रहे थे जो आसानी से उपलब्ध हो और जिसके जरिए हम इन बच्चों को सीखने, समझने और खुद को अभिव्यक्त करने की आजादी दे सकें।

प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे क्षेत्रीय संसाधन केन्द्र के टीचर फेलोशिप प्रोग्राम 2008-09 से जुड़ने के बाद हमें एक सहज-सा माध्यम नजर आया 'समाचार पत्र'। शिक्षा के क्षेत्र में समाचार पत्र का इस्तेमाल काफी दिनों से होता आ रहा है। इसके इस्तेमाल ने यह भी स्थापित कर दिया है कि इसके जरिए बच्चों की भाषा, सोचने, विश्लेषण करने और सीखने की प्रवृत्ति का सहज विकास होता है। साथ ही इसकी विविधता बच्चों को अपनी तरफ आकर्षित कर सकती है और यह बच्चों को उनके परिवेश से जोड़े रखता है। सबसे बड़ी बात यह कि यह आसानी से और कम दाम में उपलब्ध भी है। पर एक बात जो मुझे परेशान कर रही थी वह हमारे बच्चों की दैनिक हिंदी पत्रों की तरफ से बेरुखी थी। उनके अनुसार यह पुस्तकालय में रखी जाने वाली चीज है। प्रार्थना-सभा में पढ़े जाने वाले समाचारों को भी वे ध्यानपूर्वक नहीं सुनते थे और न ही नोटिस-बोर्ड पर लगे समाचार-पत्रों पर नजर डालते थे।

बच्चों से बात करने के बाद यह पता चला कि अखबार की सामग्री, उसकी छपाई बच्चों को आकर्षित नहीं करती। अधिकतर बच्चों के घर में समाचार पत्र लिया ही नहीं जाता इसलिए भी इस तरफ उनका ध्यान नहीं जाता।

अब हमें सोचना था कि क्या किया जाए। क्राफ्ट से जुड़े होने के कारण हमारा ध्यान किसी चीज के निर्माण की तरफ सहज ही चला गया। इस तरह हमने अपने स्कूल में समाचार पत्र निकालना तय किया। हमारी और हमारी परामर्शदात्री की यह राय थी कि समाचार पत्र निकालना बच्चों के लिए अच्छा काम हो सकता है और इसमें मूल्यांकित होने का भय नहीं है और आपस में विचार-विमर्श करने के भी पूरे अवसर मिलेंगे और बच्चों को खुलकर अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरित करेगा। साथ ही समाचार पत्र की विविधता उन्हें विभिन्न तरीकों से खुद को जाहिर करने का मौका देगी।

इस कार्य में हमारे सहभागी बने हमारे स्कूल के कक्षा पांच के 36 बच्चे जिनमें 14 लड़कियां और 22 लड़के थे। इनमें से तकरीबन 21.6 प्रतिशत बच्चों के घर में हिंदी समाचार पत्र आता था, पर चार ही ऐसे बच्चे थे जो समाचार-पत्र के कुछ चुने हुए विषयों को पढ़ा करते थे। लड़कियां तो उन्हें पढ़ती ही नहीं थीं। हमने 36 बच्चों को छह समूहों में बांट दिया। समूह में कार्य करने से बच्चों में आपस में मिलकर काम करने की क्षमता, एक-दूसरे से सीखने की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है। हमारे बच्चों के साथ भी ऐसा होता दिखाई पड़ा। लिखना और पढ़ना ये दोनों प्रक्रियाएं एक-दूसरे की पूरक हैं। इसीलिए हमने इस कार्य की शुरुआत वाचन से की। बच्चे रोज दैनिक समाचार-पत्र कक्षा में लाते और समूह में ही उसका वाचन करते। रोज उन्हें एक नई प्रति मिलती जो उनकी उत्सुकता को बनाए रखती थी। हर समूह से एक बच्चा अपने पसंद के समाचार पत्र और विषय को चुनकर पढ़ता था। यह प्रक्रिया बच्चों द्वारा ही संचालित होती थी। बच्चों ने धीरे-धीरे अपने पसंदीदा विषयों पर लिखना भी शुरू कर दिया। जब हमारा स्कूल दिल्ली को हरा-भरा बनाओ (Greening Delhi) जैसा कार्यक्रम आयोजित कर रहा था तब इन बच्चों ने अपने आलेख इस विषय पर तैयार किए और उन्हे प्रार्थना सभा में प्रस्तुत किया। धीरे-धीरे इन बच्चों का रुझान लिखने की तरफ बनने लगा। किसी भी विषय पर लिखना और उस पर दूसरे बच्चों के साथ चर्चा करना उनकी दिनचर्या में शामिल हो गया। अब ये बच्चे दैनिक समाचार पत्र के स्वरूप से परिचित हो चुके थे, इसीलिए आपस में विचार-विमर्श कर इन्होंने अपने समाचार पत्र का स्वरूप तय करना शुरू कर दिया। जो विषय उन्हें रुचिकर लगे, उसी के आधार पर उन्होंने अपने अखबार के पन्नों को शीर्षक दिया और इन्हीं शीर्षक के आधार पर कार्य करना आरम्भ किया। कार्य समूह में और व्यक्तिगत तौर पर किए जा रहे थे। उनके कार्य की प्रस्तुति अपनी कक्षा के साथ-साथ प्रार्थना सभा में भी होती थी। साथ ही उनकी तरह-तरह की कृतियों से कक्षा की दीवारें भी सज जाती थीं।

इस प्रक्रियाओं से गुजरने के बाद उन्होंने अपने समाचार पत्र में मुख्य

समाचार, स्कूल समाचार, इंटरव्यू, हमारी दिल्ली, हमारा पन्ना, विशेष दिन और त्योहार को प्रमुख जगह दी। मुख्य समाचार वाला पन्ना विभिन्न दैनिक समाचार पत्रों से लिए गए प्रमुख समाचारों से, स्कूल समाचार वाले पन्ने पर स्कूल में होने वाली छोटी-बड़ी घटनाओं और कार्यक्रमों के जिक्र से भरा था। 'हमारा पन्ना' भरा था बच्चों की कृतियों सेः मनोरंजक कहानियां, कई तरह के खेल जो उन्होंने खुद बनाए थे। 'विशेष दिन और त्योहार' में बच्चों ने उस महीने में पड़ने वाले त्योहारों के बारे में लिखा था। 'हमारी दिल्ली' में उनका दिल्ली से जुड़ाव दिखता था जिसमें उन्होंने दिल्ली की वासियत के साथ, यहां हो रही घटनाओं का जिक्र भी किया था। बच्चों को समाचार पत्र में छपे हीरो-हीरोइन के इंटरव्यू काफी रोचक लगते थे इसीलिए इंटरव्यू को बच्चे अपने अखबार का अनिवार्य हिस्सा बनाना चाहते थे। लेकिन आखिरकार किसका इंटरव्यू लिया जाए ? बच्चों का विचार था कि 'शिक्षकों' का, जब हमने उनसे यह पूछा कि आखिर आप करना क्या चाहते हैं ? उत्तर मिला, उन्हें जानेंगे। जब हमने ये स्पष्ट किया कि इंटरव्यू किसी का भी लिया जा सकता है, चाहे वह स्कूल का कोई एक बच्चा हो या कोई अन्य कर्मचारी। बच्चों ने अलग-अलग समूह में बंटकर अलग-अलग तरह के लोगों का इंटरव्यू लेना तय किया। कुछ ने सफाई कर्मचारियों से बात की, कुछ ने शिक्षकों से, तो कुछ ने अब दूसरे स्कूलों में पढ़ रहे स्कूल के पुराने विद्यार्थियों से इन्टरव्यू लिए। इस प्रक्रिया का सबसे अच्छा पहलू यह था कि सारे प्रश्न उन्होंने खुद तैयार किए और सभी के विचारों और कार्यों को महत्त्व देना भी शुरू किया।

जब बच्चों ने सारे पन्ने तैयार कर लिए तो इन कृतियों से अपनी कक्षा की दीवार को सजा दिया और कक्षा में तैयार हो गया एक 'प्रिंट रिच वातावरण'। अपनी कृतियों को बार-बार पढ़कर एक-दूसरे से विचार-विमर्श कर उन्होंने उन्हें और सुधारा। इस प्रक्रिया से गुजरने के बाद वे तैयार थे समाचार-पत्र को अंतिम स्वरूप देने के लिए।

अपने स्कूल के नाम को ध्यान में रखकर उन्होंने अपने समाचार पत्र का नाम दिया 'बुनियाद'।

यह समाचार पत्र पूरे स्कूल के अध्यापकों, छात्र-छात्राओं के साथ-साथ अभिभावकों के सामने भी जाएगा, इस बात से बच्चे अवगत थे इसीलिए शायद अपनी कृतियों पर बार-बार काम करना उन्हें बोझिल नहीं लगा। मेरा प्रयास था कि कक्षा के हर बच्चे की कम से कम एक रचना/कृति अखबार में हो। उनमें उत्साह बना रहे इसलिए अखबार में बच्चों की रचनाओं के साथ उनकी तस्वीर भी लगाई।

'बुनियाद' जब स्कूल में सबके सामने आया, तब सबने इस प्रयास को सराहा, इस पत्र में प्रकाशित हुई बच्चों की रचनाएं उनकी अपनी कृति

इस चित्र में एक आदमी रिक्शा में २७ ड्रम रख कर ले जा रहा है। इन ड्रमों में पानी भी भरते हैं। इन ड्रमों में कभी-कभी मिट्टी का तेल भी भर कर रखते हैं। इस चित्र में सड़क पर गाड़ियाँ खड़ी हैं। जिससे यहाँ पर एक्सिडेंट भी हो सकता है। गाड़ियाँ पार्किंग में ही खड़ी करनी चाहिए।
सुदिप

सुदिप

थी। इसके जरिए बच्चों ने एक-दूसरे को अपनी संस्कृति से जोड़ा।

बच्चों ने अपने अखबार के जरिए आम जनता को संदेश देने की भी कोशिश की थी। 'विकास' ने महरौली में हुए बम-विस्फोट कि चर्चा की जो संतोष नामक एक बच्चे द्वारा लावारिस टिफिन बॉक्स उठाने के कारण हुई थी और लोगों को लावारिस वस्तुओं को हाथ न लगाने का संदेश दिया था। 'शालू' ने 'बस स्टॉप' और दिल्ली की बसों का बयान किया। बस खाली हो या भरी, बस के गेट पर खड़े होने, बसों में बिना टिकट चलने, बस के किसी स्टॉप पर नहीं रुकने पर उस पर पत्थर फेंकने जैसी प्रवृत्तियों और उनसे होने वाली दिक्कतों की चर्चा की। इससे इन बच्चों का अपने आस-पास के माहौल से जुड़े होने, उसमें होने वाली घटनाओं के बारे में सजग बन रहे थे। उनकी इस तरह की अभिव्यक्ति ने हमारी इस धारणा को पुष्ट किया कि अपने आसपास के वातावरण से लोगों से मिलकर, आसानी से उपलब्ध सामग्रियों को पढ़कर हम अपनी विभिन्न क्षमताओं का विकास आसानी से कर सकते हैं।

कुछ बच्चे लिखित रूप से खुद को अभिव्यक्त करने में अब भी झिझक रहे थे। ऐसे में उन्हें 'पहेलियां' और 'खेल' बनाने के लिए उत्साहित किया गया। 'विपिन' जो किसी भी प्रक्रिया में खुलकर शामिल नहीं हो रहा था उसने भी 'रास्ता ढूंढ़ो' नामक मजेदार खेल

बनाया। इस खेल को काफी सराहा गया, तो धीरे-धीरे उसका रुझान भी लिखित अभिव्यक्ति की तरफ बढ़ता दिखा।

'सुदीप' मेरी कक्षा का एक ऐसा छात्र है जो चुप रहना ज्यादा पसंद करता है। उसने एक चित्र का विश्लेषण किया, यह विश्लेषण चौंकाने वाला था, इससे उसके अन्दर छुपी अवलोकन क्षमता हमारे सामने आई। उसने पुराने अखबार में दिए गए एक चित्र का अवलोकन बहुत बारीकी से लिखा। उस चित्र में रिक्शा में कुछ ड्रम ले जाते हुए दर्शाया गया था। सुदीप ने चित्र में छिपे ड्रमों को भी गिनकर कुल संख्या जानी और लिखा कि कुछ लोग इन खाली ड्रमों में पानी भी भरते हैं। चित्र में सड़क के किनारे खड़े वाहनों के बारे में लिखा कि उचित जगह पर ही पार्किंग करनी चाहिए अन्यथा दुर्घटना हो सकती है।

दिसम्बर अंक के समाचार पत्र के प्रकाशित होने के बाद हमें बहुत सारे बच्चों की अलग-अलग क्षमताओं के बारे में पता चला। समाचार-पत्र का एक पन्ना था 'समस्या छोटों की सलाह बडों की' इसमें चौथी कक्षा के बच्चों की निजी समस्याएं ली गई थीं और इस पर सातवीं कक्षा के बच्चों ने अपनी सलाह दी थी। समस्या सिर्फ पढ़ाई या स्कूल से जुड़ी नहीं थीं, बल्कि उन्होंने उन चीजों का भी जिक्र किया जो उन्हें परेशान करती हैं जैसे खेलने से रोका जाना, पड़ोस में हो रही लडाइयां और बड़ों का हमेशा निर्देश देते रहना। यह सारी चीजें हमें उनकी मनोदशा सामने लाकर रख रही थी। कक्षा सातवीं के बच्चों की सलाह भी यह साफ रूप से दर्शा रही थी कि उनमें इन चीजों को समझ कर संभालने की क्षमता है।

यह एक हस्तलिखित समाचार पत्र था इसीलिए हमने इसकी फोटोकॉपी कराई और स्कूल के सूचना-पट्ट पर लगा दिया ताकि यह स्कूल के प्रत्येक बच्चे, उनके अभिभावकों और शिक्षकों तक पहुंच में हो। समाचार पत्र के पहले अंक में यह प्रावधान रखा गया कि बच्चे, अभिभावक और स्कूल के दूसरे शिक्षक इस अंक पर अपनी राय दें।

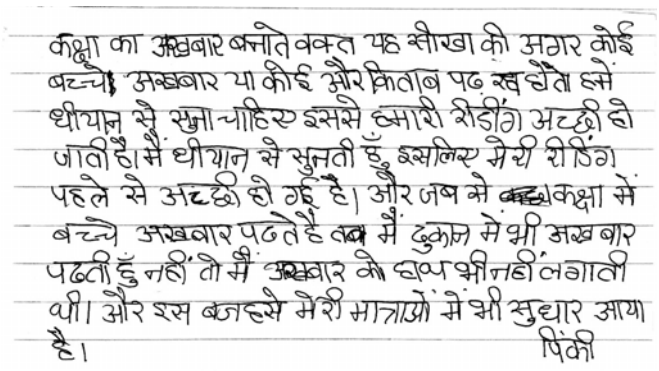

कक्षा का अखबार बनाते वक्त यह सीखा की अगर कोई बच्चे अखबार या कोई और किताब पढ रहे हैं तो हमें धीयान से सुना चाहिए इससे हमारी रीडींग अच्छी हो जाती है। मैं धीयान से सुनती हुँ इसलिए मेरी रीडिंग पहले से अच्छी हो गई है। और जब से कक्षा में बच्चे अखबार पढते हैं मैं दुकान में भी अखबार पढती हुँ नहीं तो मैं अखबार को हाथ भी नहीं लगाती थी। और इस बजह से मेरी मात्राओं में भी सुधार आया है।

पिंकी

यह एक काफी उपयोगी प्रक्रिया साबित हुई, इसके जरिए हमने शिक्षकों, अभिभावकों और स्कूल के दूसरे बच्चों को भी इस प्रक्रिया से जोड़ लिया। उनके विचार के मद्देनजर हमने अपने अगले अंक में आवश्यक संशोधन किया। इस प्रक्रिया ने बच्चों को इतना आकर्षित किया कि हमारे स्कूल के दूसरे बच्चों ने भी इसका हिस्सा बनने की इच्छा जाहिर की।

अभिभावकों, शिक्षकों और अन्य कक्षाओं के बच्चों के विचार ने, कक्षा पांच के बच्चों में नई ऊर्जा भर दी। इसके फलस्वरूप जनवरी अंक के संपादन में बच्चों ने ज्यादा सक्रिय भूमिका निभाई।

'जनवरी अंक' में हमने अपने स्कूल के एक विशेष आयोजन 'सहभोज' को विशेष स्थान दिया। यह हमारे स्कूल के अधिकतर बच्चों को पसंद आया। अपनी प्रतिक्रिया को समाचार पत्र में शामिल देख, बच्चों को खुशी मिली।

हमें बच्चों की जो प्रतिक्रियाएं मिलीं उसमें मुख्य थी 'पूरे स्कूल को एक साथ इस प्रक्रिया में शामिल होना चाहिए'। पूरी प्रक्रिया जिसमें पूरा एक सत्र लगा था हमारे बच्चों की भाषा के विकास, खुद को अभिव्यक्त करने की क्षमता; खुद को, दूसरों को और आसपास को समझने में सहायक थी। साथ ही इसके द्वारा हमने खुद की, दूसरों की कृतियों, विचार और भावनाओं का आदर करना भी सीखा।

'बुनियाद' के निर्माण के दौरान बच्चों ने अपना और अपने काम का भी मूल्यांकन किया, यह उनके लिए एक अच्छा अनुभव था और यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो हमारे व्यक्तित्व को एक नया आयाम देती है। पर यह सिर्फ शुरुआत थी। ऐसे सुखद अनुभवों के कारण ही हमारे शोधकार्य की अवधि (2008-2009) समाप्त होने के बाद भी हमने खुद को और बच्चों को इस प्रक्रिया से जोड़े रखना तय किया। इसके परिणामस्वरूप हमने 'बुनियाद' का तीसरा अंक तैयार किया इस बार पूरे स्कूल के बच्चों ने इसमें अपनी सक्रिय भूमिका निभाई।

इस अंक मे हमने एक शीर्षक 'जन्मदिन की शुभकामनाएं' पूरी तरह से छोड़ दिया क्योंकि एक अंक में कई कक्षाओं से संबंधित बच्चों के चित्र व जन्मतिथि लिखने के लिए ज्यादा जगह की जरूरत होती। इस अंक से जुड़ने वाले अन्य कक्षाओं के बच्चों ने भी अपनी रचनाओं के साथ अपनी फोटो लगाई। भविष्य के लिए मेरी योजना है कि हम सत्र में तीन अंक निकालें, जिससे ज्यादा से ज्यादा बच्चे इसमें शामिल हो सकें और उनकी कक्षा में समाचार पत्र पढ़ने की गतिविधि जारी रहे। ◆